वाणिज्य शिक्षण का महत्व

[IMPORTANCE OF TEACHING OF COMMERCE]

परिचय—मनुष्य के जीवन में वाणिज्य का प्रवेश मानव सभ्यता के विकास से भी पूर्व हो गया था। मानव सभ्यता के विकास में निरन्तर वृद्धि से, मनुष्य का जीवन वाणिज्य से और भी अधिक दृढ़ होता चला गया, और आज यह स्थिति है कि विश्व का प्रत्येक मनुष्य प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वाणिज्य से जुड़ा हुआ है अथवा हम यह कह सकते हैं कि बिना वाणिज्य के मनुष्य का आर्थिक जीवन अधूरा है। जिस प्रकार से मनुष्य को अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के लिये जल, वायु तथा भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार से मनुष्य को अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिये वाणिज्य की आवश्यकता होती है। व्यापार में निरन्तर बढ़ते हुये क्षेत्रों, मनुष्य के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न आवश्यकताओं तथा मुद्रा के प्रचलन से ही मनुष्य वाणिज्य के और भी अधिक निकट आ गया है। हमारी निरन्तर बढ़ती हुई आवश्यकताओं, रहन-सहन के स्तर, फैशन, यातायात के साधन, संचार के साधन, मनोरंजन के साधन, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार तथा दैनिक जीवन में ऐसी अन्य सुविधाओं ने मनुष्य का सम्बन्ध वाणिज्य से और अधिक दृढ़ कर दिया है। मुद्रा के आविष्कार तथा प्रचार ने भी इस सम्बन्ध में वृद्धि की है, क्योंकि वर्तमान समय में वाणिज्य का मुख्य सम्बन्ध दैनिक जीवन, व्यापार, धन तथा अन्य आर्थिक क्रियाकलापों से है और आज के युग में धन तथा आर्थिक क्रियाकलाप मनुष्य के लिये वाणिज्य का मूल आधार हैं। मनुष्य अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि करने के लिये प्रत्येक प्रकार की आर्थिक क्रियायें सम्पन्न करता है। अत: हम कह सकते हैं कि मनुष्य ने अपनी आर्थिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप वाणिज्य से और घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर लिये हैं। आज के वर्तमान युग में यह कहा जा सकता है कि वाणिज्य के बिना मनुष्य का दैनिक जीवन सम्भव नहीं है।

वाणिज्य शिक्षा का महत्त्व

(Importance of Teaching of Commerce)

वर्तमान युग में सभ्य और उन्नतिशील समाज में वाणिज्य का अनेक दृष्टिकोणों के आधार पर अत्यधिक महत्व है। निम्न बिन्दुओं के आधार पर वाणिज्य शिक्षण के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) आर्थिक क्रियाकलापों के लिये उपयोगी—आधुनिक युग में सम्पूर्ण मानव सभ्यता समाज की आर्थिक उन्नति पर ही निर्भर करती है। वाणिज्य हमें अपनी आर्थिक

Scanned by TapScanner

क्रियाओं के संचालन, नियोजन तथा नियन्त्रण के उपायों से परिचित कराती है। इससे मनुष्य की आर्थिक उन्नतित तथा समृद्धि को गति तथा दिशा मिलती है। वाणिज्य से ही मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं में वृद्धि होती है। इस वृद्धि से ही आर्थिक सम्पन्नता आती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज की आर्थिक सम्पन्नता के लिये वाणिज्य का अत्यधिक महत्व है।

(2) व्यापारी वर्ग के लिये महत्व—व्यापारियों का समस्त कारोबार भी वाणिज्य पर ही निर्भर करता है। वस्तुओं तथा विभिन्न उत्पादों को उत्पादक से क्रय करके खुदरा विक्रेताओं तथा उपभोक्ताओं तक पहुँचाने का कार्य व्यापारी वर्ग करता है। यदि वाणिज्य न हो तो, न तो किसी प्रकार का व्यापार ही हो और उपभोक्ताओं तक आवश्यक वस्तुयें ही पहुँच पायें। व्यापारी-वर्ग की क्रियाओं के लिये वाणिज्य आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

(3) उत्पादकों के लिये उपयोगी—वाणिज्य किसी भी राष्ट्र के उत्पादकों के लिये बड़ा ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। वास्तव में, वाणिज्य के अभाव में कोई भी उत्पादक अतिरिक्त उत्पादन कर ही नहीं सकता है और आज व्यापार के लिये अतिरिक्त उत्पादन अनिवार्य है। वाणिज्य उत्पादकों को उत्पादन हेतु प्रेरणा प्रदान करता है, उत्पादन के उपाय, साधन तथा क्षेत्र बताता है। वाणिज्य ही उत्पादकों को अपने अतिरिक्त उत्पाद (Product) को बाजार में लाने की सुविधा तथा तरीके प्रदान करता है। वास्तव में, आधुनिक युग में बिना वाणिज्य के कोई भी उत्पादक उत्पादन नहीं कर सकता है।

(4) राष्ट्र व समाज की समृद्धि के लिये—प्रत्येक राष्ट्र तथा समाज की आर्थिक प्रगति तथा समृद्धि उस राष्ट्र तथा समाज में चलने वाले वाणिज्यिक क्रियाकलापों पर निर्भर करती है। किसी राज्य तथा समाज की वाणिज्यिक स्थिति जितनी अच्छी होगी, उस समाज तथा राष्ट्र के लोग उतने ही अधिक सम्पन्न तथा खुशहाल होंगे। समाज की आर्थिक उन्नति पर ही समाज के अन्य पक्षों का विकास निर्भर करता है।

(5) उपभोक्ताओं के लिये उपयोगी—वाणिज्य उपभोक्ताओं के लिये भी बड़ा महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। उपभोक्ताओं को अपने दैनिक जीवन की हजारों उपयोगी तथा अनिवार्य वस्तुयें केवल वाणिज्य के सहारे ही प्राप्त होती हैं। वाणिज्य से उपभोक्ताओं को दैनिक जीवन के लिये आवश्यक वस्तुओं के अलावा विशिष्ट आवश्यकताओं की वस्तुयें भी प्राप्त होती हैं। वाणिज्य उपभोक्ताओं को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप वस्तुयें प्रदान कर उनके जीवन को सरल तथा सुविधाजनक बनाता है। वाणिज्य ही उन्हें उपभोग की विभिन्न वस्तुओं से अवगत कराता है।

(6) आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु—प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य की आवश्यकतायें बड़ी ही सीमित थीं, जिनकी पूर्ति वह स्वयं ही स्थानीय साधनों की सहायता से कर लिया करता था, किन्तु मनुष्य ज्यों-ज्यों उन्नति करता गया, उसकी आवश्यकताओं की संख्या, मात्रा तथा गम्भीरता, विविधता एवं जटिलता बढ़ती गई। आज कोई भी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति केवल अपने ही साधनों से जुटाये साधनों से नहीं कर सकता है। आवश्यकताओं की बढ़ती हुई संख्या, जटिलता तथा विविधता के कारण इनकी पूर्ति

Scanned by TapScanner

केवल अपने ही साधनों से जुटाये साधनों से नहीं कर सकता है। आवश्यकताओं की बढ़ती हुई संख्या, जटिलता तथा विविधता के कारण इनकी पूर्ति केवल वाणिज्य से ही सम्भव है।

(7) श्रमिक वर्ग के लिये महत्व—श्रमिक वर्ग के लिये वाणिज्य बड़ा ही महत्वपूर्ण है। वाणिज्य से ही उद्योगों तथा कारखानों की स्थापना होती है, जहाँ श्रमिकों को रोजगार प्राप्त होता है। वाणिज्य ही श्रमिकों की कार्य-कुशलता तथा कल्याण की बात सोचता है। श्रम-विभाजन के द्वारा श्रमिकों की दक्षता बढ़ती है, उनकी उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है तथा उत्पादन बढ़ता है। श्रम विभाजन वाणिज्य का ही एक महत्वपूर्ण आयाम है। संक्षेप में, वाणिज्य ही श्रमिकों को रोजगार देता है तथा वही इनकी कार्यदक्षता बढ़ाता है।

(8) सम्पूर्ण वस्तुओं के वितरण के लिये—उपयोगी वस्तुओं के समुचित वितरण के लिये भी वाणिज्य आवश्यक है। जिन राष्ट्रों अथवा प्रदेशों में जो वस्तु अधिक मात्रा में उत्पन्न या निर्मित होती है, वे अपने अतिरिक्त उत्पादन को उस वस्तु की कमी वाले क्षेत्रों में भेजकर अपनी आवश्यकता की अन्य वस्तु मँगा लेते हैं, जैसे उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा पंजाब गेहूँ अन्य राज्यों को भेजकर अपनी आवश्यकता के अनुसार अन्य राज्यों से कोयला, कपड़ा आदि मँगा लेते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वस्तुओं के समुचित वितरण के लिये भी वाणिज्य आवश्यक है।

(9) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास के लिये—आज सम्पूर्ण विश्व प्रलयंकारी विश्व-युद्ध के कगार पर खड़ा है। इतना सुनिश्चित है कि इस युद्ध के बाद सम्पूर्ण मानव सभ्यता लुप्त हो जायेगी। युद्ध की विभीषिका से बचने के लिये यह आवश्यक है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को मधुर बनाये रखने के लिये अन्य कार्यक्रमों के अलावा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार भी बड़ा सहायक है। वाणिज्य तथा व्यापार से हमें न केवल विदेशों से निर्मित उपयोगी तथा महत्वपूर्ण वस्तुयें ही प्राप्त होती हैं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी मधुरता आती है।

Scanned by TapScanner